IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11 ,S Iss 11a, 2022

सिंचित खेती करने से छोटे किसानों की आय में वृद्धि

प्रा. संजय फुलकर
सहयोगी प्राध्यापक,
कुंभलकर समाजकार्य सांध्यकालीन
महाविद्यालय, राजीव नगर नागपूर

प्रस्तावना:

कृषि को साधारण मन से परिभाषित किया जा सकता है कि यह किसानों द्वारा आजीविका के उद्देश्य से या व्यवसाय के रूप में अपने खेतों पर किया जाने वाला व्यवसाय है। भौगोलिक और जल उपलब्धता के आधार पर शुष्क भूमि पर खेती और सिंचित खेती ऐसे प्रकार हैं खेतों से निकाले जाने वाले उत्पादन से कृषि के तीन सीधे भाग, पशुधन आधारित कृषि, मछली पालन, आदि अस्तित्व में आए हैं साथ ही सिंचाई की उपलब्धता के अनुसार बागवानी कृषि, कृषि योग्य खेती, प्रकार भी हैं। खाद के उपयोग के आधार पर जैविक खेती, रासायनिक खेती भी अस्तित्व में आई है। स्थुलमान के अनुसार प्राकृतिक और आर्थिक कारकों से कृषि के प्रकार में परिवर्तन होता है।

कृषि का अर्थ है भोजन, यह घास, कपड़ा फाइबर, जानवरों, मद्य और पौधों का एक प्रबंधित उत्पाद है। (पाटिल विश्वास, कोरडवाहू शेती 3 जनवरी 2015)

शुष्क भूमि पर खेती की समस्या केवल उन किसानों के अस्तित्व और मृत्यु से संबंधित नहीं है। यह पूरे समाज की समस्या है, इसलिए नीति निर्माताओं को इसे शुष्क भूमि के किसानों की तुलना में अधिक तीव्रता से समझना चाहिए। शुष्क भूमि पर खेती, किसान के प्रयास, उनकी समस्याएं और सरकारी नीति की चिकित्सकीय व्यवस्था की जानी चाहिए। कृषि की वर्तमान स्थिति मोटे तौर पर सरकार से लेकर समाज तक और व्यवस्था से लेकर नीति निर्माण तक कृषि प्रधान है, शुष्क भूमि पर खेती अब कोई निजी मुद्दा नहीं है। कांग्रेस गठबंधन की पिछली सरकार ने ड्राईलैंड मिशन को हाथ में लिया लेकिन ऐसे मिशन चलाए जाते हैं। इस पर करोड़ों रुपये खर्च होते हैं और उस मिशन का क्या होता है। यह बात सिर्फ किसानों को ही नहीं बल्कि सरकार को भी समझ में नहीं आती है।

महाराष्ट्र राज्य में, शुष्क भूमि कृषि क्षेत्र का लगभग 85 प्रतिशत 750 मिमी की औसत वर्षा है। कम क्षेत्र वर्षा प्रवण क्षेत्र हैं जिनमें वर्षा देर से शुरू होती है और 3-5 सप्ताह की फसल वृद्धि अवधि के दौरान अपर्याप्त मात्रा बदलती मौसम स्थितियों की विशेषता है। ऐसी स्थिति में शुष्क भूमि की खेती की उपयोगी तकनीकों का उपयोग करके कुछ हद तक निश्चित उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। भू-जल, सूर्य प्रकाश और वायु आदि प्राकृतिक तत्वों के कुशल उपयोग के लिए भूमि प्रबंधन और फसल विधि द्वारा उचित योजना आवश्यक है (www.vnmkvtech. blogspot.com कोरडवाहू शेतीचे व्यवस्थापन 19 फेबुरवारी 2017)

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11 ,S Iss 11a, 2022

फसल और कृषि के प्रकार भूमि और भूमि पर निर्भर करते हैं। सवाल मुख्य रूप से पूछा जाता है कि कृषि किस प्रकार की होती है। वैज्ञानिकों ने जैविक खेती को जैविक तकनीक का नाम दिया है। इस कृषि को भविष्य की कृषि कहा जाता है। मिट्टी मुख्य रूप से हल्की, मध्यम और भारी तीन प्रकार की होती है। मिट्टी, रंग, मिट्टी की बनावट आदि के अनुसार मिट्टी के विभिन्न प्रकार होते हैं (www.ebachatgat lcom खेती के प्रकार)

महाराष्ट्र की प्राकृतिक संरचना में विविधता है। इसी प्रकार जलवायु के विभिन्न आविष्कारों में भी अंतर है। तो स्वाभाविक रूप से महाराष्ट्र में उसी प्रकार की कृषि करना संभव नहीं है। खेती की विधि क्षेत्रीय तत्व की प्रधानता से प्रभावित होती है।

महाराष्ट्र में कृषि के निम्नलिखित प्रकार हैं

(1) सिंचित खेती (2) आद्र खेती (3) बागवानी (4) शुष्क भूमि खेती या जीराईत खेती (5) चरणबद्ध खेती (6) स्थलातरीत खेती (सांवत, नीलेश; महाराष्ट्र कृषि प्रकार 21 नवंबर 2011)

आज लघुकृषकको के परिवार के सदस्य कृषि में काम करते हैं, इसलिए उन्हें अन्य स्थानों पर काम करना पड़ता है क्योंकि इससे होने वाली आय कम होती है। और परिवार को उस आय से जीविकोपार्जन करना पड़ता है। कृषि की मात्रा कम होने के कारण पूरे वर्ष परिवार के सभी सदस्यों को कृषि में काम नहीं मिलता है। अतः कुछ सदस्य मजदूरी का व्यवसाय या अन्य कार्य करते हुए दिखाई देते हैं। नीचे दी गई तालिका में, कृषि का प्रकार और सभी तरीकों से वार्षिक पारिवारिक आय यह सहसंबंध दिखाया गया है

Abstract.:

कृषि को साधारण मन से परिभाषित किया जा सकता है कि यह किसानों द्वारा आजीविका के उद्देश्य से या व्यवसाय के रूप में अपने खेतों पर किया जाने वाला व्यवसाय है। भौगोलिक और जल उपलब्धता के आधार पर शुष्क भूमि पर खेती और सिंचित खेती ऐसे प्रकार हैं। फसल और कृषि के प्रकार भूमि और भूमि पर निर्भर करते हैं। सवाल मुख्य रूप से पूछा जाता है कि कृषि किस प्रकार की होती है। वैज्ञानिकों ने जैविक खेती को जैविक तकनीक का नाम दिया है। इस कृषि को भविष्य की कृषि कहा जाता है। मिट्टी मुख्य रूप से हल्की, मध्यम और भारी तीन प्रकार की होती है। मिट्टी, रंग, मिट्टी की बनावट आदि के अनुसार मिट्टी के विभिन्न प्रकार होते हैं।

Keywords.: खेती, आजीविका, मुख्य व्यवसाय, शुष्क भूमि , सिंचित खेती, जैविक तकनीक

अध्ययन का उद्देश:

1. लघुकृषको के द्वारा सिंचित खेती करने से लघुकृषको का जिवन स्तर बढता है, इसका विश्लेषण करना।
2. लघुकृषको के द्वारा सिंचित खेती करने से फसल मे उत्पादन बढता है, इसका अध्ययन करना।
3. लघुकृषको के द्वारा सिंचित खेती करने से अर्थिक विकास होता है, इसका अध्ययन करना।

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

अध्ययन की परिकल्पना:

1. लघुकृषको के द्वारा सिंचित खेती करने से लघुकृषको का सामाजिक जिवन स्तर बढता है।
2. लघुकृषको के द्वारा सिंचित खेती करने से बागवानी खेती करने का प्रमाण बढता है।
3. लघुकृषको के द्वारा सिंचित खेती करने से अर्थिक विकास होता है।

संशोधन पध्दती:

अध्ययन का विश्व एवं क्षेत्र: प्रस्तुत अध्ययन पूर्वी विदर्भ के भंडारा, गोंदिया, गडचिरीली, वर्धा, चंद्रपुर और नागपुर जिले के आर्थिक पिछड़ापन, शैक्षिक पिछड़ापन, कृषि की कम उत्पादकता स्थिति, छोटे किसानों का जैविक खेती पर अधिक निर्भर होना और सहायक उत्पादन का निम्न स्तर, जिले के सभी छोटे किसान आदि बातों पर विचार कर के अध्ययन का विश्व हैं। जिसमें से 292 छोटे किसानों को उत्तरदाता के रूप में समाविष्ट किया गया है। और यह अध्ययन डिसेंबर 2021 से मार्च 2022 इस कालावधी मे किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक आराखडे का प्रयोग किया गया है।

वर्तमान अध्ययन में, विदर्भ के 292 छोटे किसानों को गैर-संभाव्यता नमूनाकरण विधि का उपयोग करके सुविधा नमूनाकरण के माध्यम से शामिल किया गया था।

उत्तरदाताओं की कृषि का प्रकार और सभी तरीकों से वार्षिक पारिवारिक आय इससे सहसंबंधित द्विचल तालिका

अ क्र	कृषि का प्रकार	परिवार की वार्षिक आय					कुल
		40, 000 रु. के भीतर	41, 000 रु. से 80,000 रु.	81, 000 से 1, 20, 000 रु.	1, 21, 000 रु. से 1, 60, 000 रु.	1, 61, 000 रु. से अधिक अधिक	
1	सिंचित	86 (29.5%)	58 (19.9%)	28 (9.6%)	16 (5.5%)	12 (4.1 %)	200 (68.5%)
2	शुष्कभूमि	27 (9.2%)	27 (9.2%)	10 (3.4%)	7 (2.4%)	10 (3.4%)	81 (27.7%)
3	पडित	2 (0.7%)	3 (1.0%)	6 (2.1%)	0 (0%)	0 (0%)	11 (3.8%)
	कुल	118 (39.4%)	88 (30.1%)	44 (15.1%)	23 (7.9%)	22 (7.5%)	292 (100%)

(Chi.Sq.=19.862, df=8, CC=0.252, N=292, P>0.05).

उपरोक्त तालिका स्वतंत्र चर में कृषि के प्रकार को दर्शाती है और इसमें सिंचित, शुष्क भूमि, पडित जैसी 3 विकल्प शामिल हैं। तो उस पर निर्भर चालान में परिवार की वार्षिक आय का उल्लेख सीधे तरीके से किया गया है और इसमें 40, 000 रु. के भीतर, 41, 000 रु. से 80,000 रु. 81, 000 से 1, 20, 000 रु. 1, 21, 000 रु. से 1, 60, 000 रु. ऐसे 5 विकल्प शामिल हैं।

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

सिंचित खेती के प्रकार वाले उत्तरदाताओं की संख्या 200 है और उनका अनुपात 68.5 प्रतिशत है। उसमें, सभी तरीकों से परिवार की वार्षिक आय 40,000/- के भीतर है और उत्तरदाताओं का अनुपात 29.5 प्रतिशत है। जबकि परिवार से सभी तरह से रु. 41,000/- से रु. 80,000/- की वार्षिक आय वाले उत्तरदाताओं का अनुपात 19.9 प्रतिशत है। और परिवार के सभी तरीकों से रु. 81,000/- से रु. 1,20,000/- की वार्षिक आय वाले उत्तरदाताओं का अनुपात 9.6 प्रतिशत है। और 1,21,000/- से 1,60,000/- परिवार की वार्षिक आय वाले उत्तरदाताओं का अनुपात सभी तरीकों से 5.5 प्रतिशत है। और सभी तरीकों 1,61,000/- से ऊपर के परिवारों से वार्षिक आय वाले उत्तरदाताओं का अनुपात 4.1 प्रतिशत है।

शुष्क भूमि खेती में उत्तरदाताओं की संख्या 81 है और उनका अनुपात 27.7 प्रतिशत है। उसमें, सभी तरीकों से परिवार की वार्षिक आय 40,000/- के भीतर है और उत्तरदाताओं का अनुपात 9.2 प्रतिशत है। जबकि परिवार से सभी तरह से रु. 41,000/- से रु. 80,000/- की वार्षिक आय वाले उत्तरदाताओं का अनुपात 9.2 प्रतिशत है। और परिवार के सभी तरीकों से रु. 81,000/- से रु. 1,20,000/- की वार्षिक आय वाले उत्तरदाताओं का अनुपात 3.4 प्रतिशत है। और 1,21,000/- से 1,60,000/- परिवार की वार्षिक आय वाले उत्तरदाताओं का अनुपात सभी तरीकों से 2.4 प्रतिशत है। और 1,61,000/- से ऊपर के परिवारों से वार्षिक आय वाले उत्तरदाताओं का अनुपात सभी तरीकों से 3.4 प्रतिशत है।

शुष्क भूमि कृषि के प्रकार वाले उत्तरदाताओं की संख्या 11 है और उनका अनुपात 3.8 प्रतिशत है। इसमें परिवार की सभी स्रोतों से वार्षिक आय 40,000/- के अंदर वाले उत्तरदाताओं का अनुपात 0.7 प्रतिशत है। जबकि 41,000/- से 80,000/- रुपये के बीच परिवार की सभी स्रोतों से वार्षिक आय वाले उत्तरदाताओं का अनुपात 1 प्रतिशत है। और 81,000/- से 1,20,000/- रुपये तक परिवार की सभी स्रोतों से वार्षिक आय वाले उत्तरदाताओं का अनुपात 2.1 प्रतिशत है। 1,21,000/- से 1,60,000/- रुपये और 1,61,000/- रुपये से अधिक परिवार की सभी स्रोतों से वार्षिक आय वाले उत्तरदाताओं का अनुपात एक भी पाया नहीं गया।"""

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि सिंचित खेती के प्रकार वाले उत्तरदाताओं का अनुपात सबसे अधिक 68.5 प्रतिशत है। इसके अलावा, शुष्क भूमि खेती प्रकार वाले उत्तरदाताओं का अनुपात 27.7 प्रतिशत है और पडीत खेती प्रकार वाले उत्तरदाताओं का अनुपात 3.8 प्रतिशत है।

स्वतंत्र चल और आश्रित चल के बीच सहसंबंध देखने के लिए संख्यात्मक काईवर्ग का परीक्षण किया गया था, काईवर्ग मुल्य 19.86 है और यह तालिका मुल्य से अधिक है। (Chi.Sq.=19.862, df=8, CC=0.252, N=292, P>0.05). इसका मतलब यह है कि अधिकांश लघुकृषको में कृषि का गीला रूप है। जिससे यह देखा जाता है कि उनकी आय भी अधिक होती है। जिन लघुकृषको को ओलीत की कृषि वह अनुपात है जिसका अनुपात छोटे किसान खेतों से एक वर्ष में दो से अधिक फसलें पैदा करते हैं। देखा जाता है कि वे अपने परिवार को लाभ पहुंचाते हैं।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11 ,S Iss 11a, 2022

ग्रामीण क्षेत्रों में दिन-प्रतिदिन सिंचित खेती की मात्रा बढ़ाने के लिए पानी की सही योजना बनाने के लिए सभी लघुकृषको के साथ जन जागरूकता का कार्य किया जाएगा। शुष्क भूमि पर खेती की मात्रा तभी घटेगी जब खेत में गिरने वाली पानी की बूंदें बिना बर्बाद किए खेत में चली जाएं। छोटे किसानों की आर्थिक आय बढ़ाने के लिए फसल सेवन की मात्रा बारह गुना बढ़नी चाहिए। लघुकृषको में सामूहिक खेती को प्राथमिकता दी जानी चाहिए जिससे खेती की लागत कम होगी और उत्पादन बढ़ेगा। इसके लिए सभी लघु फिल्मों का संगठनात्मक रूप से एक साथ आना जरूरी है। यदि हम एक साथ आते हैं, तो सभी के बीच सहयोग की भावना बढ़ेगी और इससे एक-दूसरे को गीलापन पैदा करने में मदद मिलेगी और यह सब लघु कथाओं के संगठन के गठन के बिना संभव नहीं होगा।

सुचना व शिफारसी:

1. लघुकृषको का सिंचित खेती करने करने का प्रमाण बढने के लिऐ सरकार ने सिंचाई व्यवस्था उपलब्ध करानी चाहिऐ।
2. लघुकृषको का सिंचित खेती करने के लिऐ नई तंत्रज्ञान को फ्रि मे उपलब्ध कराना चाहिऐ।
3. लघुकृषको का सिंचित खेती करने से निकलनेवाले फसल को हमी भाव देना चाहिऐ।
4. लघुकृषको को आधुनिक उपकरण खरीदने के लिऐ सरकार द्वारा सबसिडी देना चाहिऐ।

संदर्भ:-

- पाटिल विश्वास, (3 जनवरी 2015), कोरडवाहू शेती : महाराष्ट्र टाईम्स
- www.vnmkvtech. blogspot.com (19 फेब्रुवारी 2017) कोरडवाहू शेतीचे व्यवस्थापन:
- www.ebachatgat lcom खेती के प्रकार